ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 679-682
www.allresearchjournal.com
Received: 25-08-2020
Accepted: 29-09-2020

विवेक कुमार
शोध छात्र, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

हरिशंकर सिंह
उपाचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
विवेक कुमार
शोध छात्र, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

विवेक कुमार, हरिशंकर सिंह

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2020.v6.i10k.7503

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श का चयन बहुस्तरीकृत गुच्छ प्रतिदर्शन विधि से किया गया एवं प्रतिदर्श के रूप में कक्षा 11 के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र और 50 छात्राएं) को शामिल किया गया है। ऑकड़ो के संकलन में मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मेंटल हेल्थ बैटरी का उपयोग किया गया है। अध्ययन में निष्कर्ष पाये गये कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र और छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य एवं उसकी विमाओं– सांवेगिक स्थिरता, सम्पूर्ण समायोजन, स्वयत्तता, सुरक्षा–असुरक्षा, आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर है, जबकि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा–बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कुंजी शब्द– माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राएं, मानसिक स्वास्थ्य– सांवेगिक स्थिरता, समायोजन, स्वायत्तता, सुरक्षा–असुरक्षा, आत्म–प्रत्यय, बुद्वि।

प्रस्तावना:

बालक के जन्म के बाद सम्पूर्ण जीवन में शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ हुये बिना अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता है। बालक के सर्वांगीण विकास के लिये मस्तिष्क का स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। बालक के सर्वागींण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। बालक के शिक्षा ग्रहण करने में मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। यदि कोई बालक मानसिक रूप से स्वस्थ है तो शिक्षा को अच्छे ढंग से ग्रहण कर सकेगा तथा किसी भी कार्य को करने में सक्षम होगा। लेकिन यदि कोई बालक मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है तो वह शिक्षा को अच्छे ढंग से नहीं ग्रहण कर पायेगा साथ ही उसकी शैक्षिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बाधायें आयेंगी। मानसिक स्वास्थ्य का बालक की शैक्षिक आकांक्षा, अध्ययन आदत, लक्ष्यों आदि पर भी प्रभाव पड़ता है। बालक के समायोजन में मानसिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। यदि बालक का व्यवहार सभी विषय परिस्थितियों में एक समान रहता है तो वह मानसिक रूप से स्वस्थ होगा लेकिन यदि बालक का व्यवहार विषय परिस्थितियों में समान नहीं रहता है तो वह मानसिक रूप से अस्वस्थ होगा। मानसिक स्वास्थ्य का परिवार व समाज पर भी प्रभाव पड़ता है, जैसे किसी का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है तो वह व्यक्ति समाज व परिवार में प्रिय रहेगा। मानसिक स्वास्थ्य संवेगात्मक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है तो उस व्यक्ति में संवेगात्मक स्थिरता अधिक होगी जिससे कि व्यक्ति उचित–अनुचित का ज्ञान कर पाता है।

कुछ विद्यार्थियों को कक्षा में सभी पसन्द करते हैं क्योंकि उसका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है, जिससे बालक में अध्ययन आदत, रूचियाँ, बुद्धि, आदि अच्छी होगी। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को जानना अत्यन्त आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य को जानकर विद्यार्थियों में शैक्षिक सफलता का निरन्तर विकास किया जा सकता है। सभी विद्यार्थियों में व्यक्तिगत विभिन्नतायें पायी जाती है तथा सभी का मानसिक स्वास्थ्य भी अलग–अलग होता है। शिक्षक के लिये मानसिक स्वास्थ्य को जानना नितान्त आवश्यक है जिससे शिक्षक विद्यार्थियों को इस प्रकार पठन–पाठन कराएं जिससे कि विद्यार्थी अधिकतम शैक्षिक प्रगति कर सकें। अतः मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता के कारण उच्च

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सांवेगिक स्थिरता की तुलना करना।
2- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सम्पूर्ण समायोजन की तुलना करना।
3- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा स्वायत्तता की तुलना करना।
4- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सुरक्षा–असुरक्षा की तुलना करना।
5- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा आत्म–प्रत्यय की तुलना करना।
6- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा बुद्धि की तुलना करना।
7- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।

शून्य परिकल्पनाएं–

1- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अंतर नहीं है।
2- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
3- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा स्वायत्तता में सार्थक अन्तर नहीं है।
4- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सुरक्षा–असुरक्षा में सार्थक अन्तर नहीं है।
5- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।
6- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
7- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में बाँदा जिले के यू0पी0 बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–11 के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

प्रतिदर्श– प्रतिदर्श का चयन बहुस्तरीय गुच्छ प्रतिदर्शन विधि से बाँदा जिले में यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित 5 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–11 के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र और 50 छात्राएं) का चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण– प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मेंटल हेल्थ बैटरी का उपयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत शोध अध्ययन में बाँदा जिले के यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 11 के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र और 50 छात्राएं) को शामिल किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु एस0पी0एस0एस0 के माध्यम से टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका 1: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सांवेगिक स्थिरता की तुलनात्मक स्थिति

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्राएं		टी–अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्राएं	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
संवेगिक स्थिरता	50	50	7.3000	1.2938	10.4800	.86284	15.821	98	.00

तालिका 1 से स्पष्ट है कि टी अनुपात का मान 15.821 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अंतर है। चूँकि छात्राओं का मध्यमान (10.4800) छात्रों के मध्यमान (7.3000) से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता छात्रों से अधिक है।

तालिका 2: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सम्पूर्ण समायोजन की तुलनात्मक स्थिति

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्राएं		टी अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्रा,	मध्यमान	मनक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
सम्पूर्ण समायोजन	50	50	19.5600	2.16804	23.2800	2.71834	7.565	98	.00

तालिका–2 से स्पष्ट है कि टी–अनुपात का मान 7.565 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अन्तर है। चूँकि छात्राओं का मध्यमान (23.2800) छात्रों के मध्यमान (19. 5600) से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का सम्पूर्ण समायोजन छात्रों से अधिक है।

तालिका 3: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा स्वायत्तता की तुलनात्मक स्थिति

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्राएं		टी अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्राएं	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
स्वायत्तता	50	50	6.3800	.94524	9.0800	1.32234	11.746	98	.00

तालिका–3 से स्पष्ट है कि टी–अपुनात का मान 11.746 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की बिना स्वायत्तता में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य कि विमा स्वायत्तता में सार्थक अन्तर है। चूँकि छात्राओं का मध्यमान (9.0800), छात्रों के मध्यमान (6.3800) से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की स्वायत्ता, छात्रों से अधिक है।

तालिका 4: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सुरक्षा–असुरक्षा की तुलनात्मक स्थिति–

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्रायें		टी अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्राएं	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
सुरक्षा–असुरक्षा	50	50	6.8400	1.33034	8.4800	1.07362	6.784	98	.00

तालिका–4 से स्पष्ट है कि टी–अनुपात का मान 6.784 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सुरक्षा–असुरक्षा में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सुरक्षा–असुरक्षा ने सार्थक अन्तर है। चूँकि छात्राओं का मध्ययमान (8.4800) छात्रों के मध्यमान (6.8400) से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की सुरक्षा–असुरक्षा छात्रों से अधिक है।

तालिका 5: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा आत्म प्रत्यय की तुलनात्मक स्थिति–

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्रायें		टी अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्राएं	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
आत्म–प्रत्यय	50	50	6.9600	1.12413	9.4800	1.09246	11.368	98	.00

तालिका–5 से स्पष्ट है कि टी–अनुपात का मान 11.368 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा आत्म प्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं कें मानसिक स्वास्थ्य की विमा आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर है। चूँकि छात्राओं का मध्यमान (9.4800), छात्रों के मध्यमान (6.8400) से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का आत्मप्रत्यय, छात्रों से अधिक है।

तालिका 6: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा बुद्धि की तुलनात्मक स्थिति–

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्राएं		टी अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्राएं	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
बुद्धि	50	50	14.0400	1.64081	14.9800	3.32885	1.791	98	.076

तालिका–6 से स्पष्ट है कि टी–अनुपात का मान 1.791 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 7: उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य की तुलनात्मक स्थिति–

चर	सम्पूर्ण संख्या (N)		छात्र		छात्राएं		टी अनुपात	मुक्तांश (df)	सार्थक
	छात्र	छात्राएं	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
मानसिक स्वास्थ्य	50	50	61.0800	5.00139	75.7800	5.83547	13.525	98	.000

तालिका–6 से स्पष्ट है कि टी–अनुपात का मान 13.525 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसमें छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता छात्रों से अधिक पायी गयी।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक

अन्तर पाया गया। जिसमें छात्राओं का सम्पूर्ण समायोजन छात्रों से अधिक पाया गया।

3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा स्वायत्तता में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसमें छात्राओं की स्वायत्तता छात्रों से अधिक पायी गयी।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा सुरक्षा–असुरक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसमें छात्राओं की सुरक्षा–असुरक्षा छात्रों से अधिक पायी गयी।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसमें छात्राओं का आत्म–प्रत्यय छात्रों से अधिक पाया गया।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
7. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसमें छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य छात्रों से अधिक पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थः

प्रस्तुत शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही साथ मानसिक स्वास्थ्य एवं उसकी विभिन्न विमाओं सांवेगिक स्थिरता, सम्पूर्ण समायोजन, स्वायत्तता, सुरक्षा–असुरक्षा, आत्म–सम्प्रत्यय एवं बुद्धि के विषय में विद्यार्थियों के स्थिति की जाकारी भी प्राप्त कर सकेंगे। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य एवं उसकी विभिन्न विमाओं में छात्र–छात्राओं की स्थिति के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित कमजोरियों एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण नीतियों, विधियों एवं शैक्षिक तकनीकों का उपयोग कर उपचारात्मक शिक्षण प्रदान कर सकते हैं जिससे कि छात्र–छात्राओं के शैक्षिक विकास हेतु अच्छे मानसिक स्वास्थ्य एवं सकारात्मक शैक्षिक वातावरण को विकसित किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. धर्नेन्द्रपा, एस0 एन (2012). अ स्टडी आफ रिलेशनशिप अमंग मेन्टल हेल्थ, इमोशनल इंटेलीजेन्स एंड अकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स (पी0–एच0डी0 शाोध प्रबन्ध). डिपार्टमेन्ट ऑफ स्टडीज एण्ड रिसर्च इन एजूकेशन युनिवर्सिटी ऑफ मैसूर, मानस गंगोत्री मैसूर, कर्नाटक।
2. नमी, वाई0 एवं अन्य (2014). द स्टूडेन्ट्स मेन्टल हेल्थ स्टेटस. प्रोसीडिया–सोशल ऐण्ड विहैविरल साइन्सेस, 114, 840–844. क्व्रू 10ण्1016ध्रऐइचतवण्2013ण्12ण्794
3. रेन, वी0एल0 (2017). इफेक्ट आफ मेन्टल हेल्थ ऑन स्टूडेन्ट लर्निंग. टी0एल0ए0आर0, 22(2), 39–58. रिट्राइव ऑन सितम्बर 28, 2020 फ्राम https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1154566.pdf
4. सलीम, एस0, महमूद, जे0 एवं नाज, एम0 (2013). मेन्टल हेल्थ प्राब्लम्स इन युनीवर्सिटी स्टूडेन्ट्स : अ प्रीवेलेन्स स्टडी. एफ0डब्ल्यू0यू0 जर्नल ऑफ सोशल साइंसेस, 7(2), 124–130. रिट्राइव ऑन सितम्बर 29, 2020 फ्राम file:///D:/FARM%20PHOTO/Downloads/11.MentalHealthProblemsinUniversity.pdf
5. साहू, विनीता (2011). अनाथ बच्चों में आत्म–प्रत्यय, मानसिक स्वास्थ्य एवं नियन्त्रणोन्मुखता का एक अध्ययन (पी–एच0डी0 शोधप्रबन्ध). वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
6. सिंह, अनीता (2010). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षणिक निष्पत्ति से सम्बन्ध का अध्ययन (पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध). डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद (उ0प्र0)।
7. सिंह, अनुराग (2017). रोल ऑफ इंटलीजेन्स, रेसीलिएन्स ऐण्ड पर्सनालिटी इन मेन्टल हेल्थ ऑफ एडोलसेंट्स (पी–एच0डी0 शोधप्रबन्ध). डिपार्टमेन्ट ऑफ साइकाल्जी, फैकल्टी ऑफ सोशल साइन्स, बनारस हिन्दू युनीवर्सिटी, वाराणसी।